श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह, सोनगढ़

पूज्य गुरुदेवश्री के श्रीसमयसार परमागम के 19वीं बार के प्रवचन नं. 486 (9वीं सर्वदर्शित्व शक्ति एवं 10वीं सर्वज्ञत्व शक्ति) पर आधारित कुछ मार्मिक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 सर्वदर्शित्व शक्ति पर्याय में कब प्रगट होती है ?
उत्तर 1 "सर्वदर्शित्व शक्ति आत्मा में त्रिकाल है और सर्वदर्शित्व शक्ति का रुप अनन्त गुणों में है" ऐसी अन्तर में दृष्टि करने से जब पर्याय में परिणमन होता है तब सर्वदर्शित्व को देखा – ऐसा कहने में आता है।

प्रश्न 2 अज्ञानी मूढ़ जीव की कैसी मान्यता होती है?
उत्तर 2 जो जीव ऐसा मानता है कि देव–गुरु–धर्म की श्रद्धा करने से, व्रत पालन आदि मन्द राग की क्रियाएं करने से परम्परा से मोक्ष मिलेगा, वह अज्ञानी मूढ़ जीव चारों गतियों में भटकता है।

प्रश्न 3 "अद्भुत रस" किसे कहा है?
उत्तर 3 श्रृंगार रस, शान्त रस, वीर रस आदि नौ रस हैं। जब एक समय में सर्वदर्शित्व और सर्वज्ञत्व शक्ति प्रगट होती है तब एक समय की पर्याय सर्व लोकालोक को देखती है। सर्व को सामान्यपने देखती है और दूसरे ज्ञान की पर्याय सर्व को भिन्न–भिन्न करके देखती है। आत्मा भिन्न, गुण भिन्न, प्रत्येक गुण की पर्याय भिन्न, पर्याय के अविभाग प्रतिच्छेद भिन्न ऐसे सर्व को भिन्न जानती है। एक ही समय में दो पर्यायें प्रगट होती है इसका नाम **अद्भुत रस** है।

प्रश्न 4 मोक्षार्थी पुरुष को प्रथम क्या करना?
उत्तर 4 पूज्य गुरुदेवश्री ने श्रीसमयसारजी की गाथा 17 के संदर्भ से कहा है कि मोक्षार्थी पुरुष को सब बातें छोड़कर प्रथम जीवराज को जानना और फिर उसका श्रद्धान करना। इस गाथा में ऐसा नहीं कहा कि प्रथम देव–गुरु को जानना या नौ तत्वों को जानना। इसलिए सर्वप्रथम आत्मा को जानना।

प्रश्न 5 सर्वज्ञत्व शक्ति को पूज्य गुरुदेवश्री ने श्रीमद्राजचन्द्रजी के किन बोल द्वारा समझाया है?
उत्तर 5 श्रीमद्राजचन्द्रजी के बोल –

1. श्रद्धा अपेक्षा से केवलज्ञान हुआ।
2. विचार अपेक्षा से सर्वज्ञपना हुआ।
3. इच्छा अपेक्षा सर्वज्ञ हुआ।
4. कुछ गुण की अपेक्षा से सर्वज्ञपना वर्तमान वर्तता है।
5. निश्चयनय की अपेक्षा से सर्वज्ञपना वर्तमान में शक्तिरुप से अन्दर विद्यमान है।

अविरल जैन एवं चन्द्रप्रताप
कक्षा 10

अन्य विषयों पर आधारित कुछ प्रश्नोत्तर :–

प्रश्न 1. उपादान–निमित्त को जानने से क्या लाभ हैं ?

उत्तर 1. उपादान–निमित्त का यथार्थ स्वरूप जानने से लाभ –

– एक कार्य का कर्ता दूसरा हैं ऐसी अनादि की भ्रांति और भ्रमणा दूर होती हैं।
– पर पदार्थ के कर्तापने का अभिमान दूर होता हैं ।
– पर पदार्थ से या अन्य जीवों से मुझे लाभ होगा ऐसी पराश्रय भावना का अभाव होता हैं।
– प्रत्येक द्रव्य की स्वतंत्रता का ज्ञान होता हैं और स्वावलंबन का भाव उत्पन्न होता हैं।
– पर पदार्थों के सहयोग से होने वाली आकुलता का अभाव होता हैं और सहज स्वाभाविक शांतदशा प्रगट होती हैं।
– प्रत्येक पदार्थ स्वयं के परिणमन का कर्ता हैं और ऐसी योग्यता प्रत्येक द्रव्य में होती हैं।

प्रश्न 2. सर्वज्ञ भगवान द्वारा कथित विश्व व्यवस्था क्या है?

उत्तर 2. सर्वज्ञ भगवान द्वारा कथित विश्व व्यवस्था –

– प्रत्येक जीव अपनी भूल से दुखी है और स्वयं की भूल सुधारकर सुखी हो सकता हैं।
– तुझे अगर मुक्ति का प्रयोजन हो तो मैं ही परमात्मा हूँ – ऐसा निर्णय कर।
– प्रत्येक पर्याय का परिणमन स्वयं के षट्कारक से स्वतंत्र होता हैं।
– उत्पाद–व्यय–धौव्य युक्तं सत्।
– प्रत्येक द्रव्य की प्रत्येक पर्याय क्रमबद्ध ही होती हैं।
– जो राग को उपादेय मानता हैं वह आत्मा को हेय मानता हैं, इसका फल संसार है और जो आत्मा को उपादेय मानता हैं वह राग को हेय मानता हैं इसका फल मोक्ष है।
– सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्राणि मोक्षमार्गः।
– स्वद्रव्य और अन्य सभी परद्रव्यों को भिन्न भिन्न देखो।
– ज्ञान का अभ्यास करने से भेदज्ञान होता हैं और भेदज्ञान का अभ्यास करने से केवलज्ञान होता है।

प्रश्न 3. तत्त्वविचार की प्रकिया क्या हैं ?

उत्तर 3. धर्म की शुरूवात आत्मानुभूति से ही होती है। आत्मानुभूति ही आत्मा का धर्म है। इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए जिन वास्तविकताओं का ज्ञान आवश्यक हैं उसे प्रयोजनभूत तत्त्व कहते है और उसके संदर्भ में विकल्पात्मक प्रयत्न ही तत्त्वविचार हैं।

प्रकिया –

1–सात तत्त्व संबंधी विचारणा ।
2–मैं कौन हूँ मेरा सच्चा स्वरूप क्या हैं।
3–पूर्ण सुखमय दशा कैसी है और उसे किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं ?
4–विभाव में मेरी रूचि हैं उसे मैं कैसे दूर करूँ ?
5–सच्चे देव–शास्त्र–गुरू के निर्णय।

प्रश्न 4. पुण्य और पाप दोनों समान हैं। स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर 4. दोनों ही मुक्ति के मार्ग में बाधक हैं और दोनों भाव से कर्म का बंध होता हैं।

- पुण्य के उदय में अनुकूल संयोग एवं पाप के उदय में प्रतिकूल संयोग मिलना – दोनों पुद्गल जनित हैं। इसलिए पुण्य के फल में हर्ष और पाप के फल में शोक नहीं करना।
- संक्लेश परिणाम और विशुद्ध परिणाम दोनों विभावभाव हैं।
- सुगति और कुगति दोनों चार गति रूप संसार परिभ्रमण ही हैं।
- पुण्य सोने की बेड़ी और पाप लोहे की बेडी के समान है, दोनों बंधन का काम ही करती हैं।

प्रश्न 5. इस निकृष्ट पंचम काल में पूज्य गुरूदेवश्री की महिमा किस प्रकार की जाय ?

उत्तर 5. पूज्य गुरूदेवश्री का भेदज्ञान इतना तीक्ष्ण था कि जिसको वह तीक्ष्णधारा लगती उसका मिथ्यात्व चूरचूर हो जाये। उन्होने अंधे को देखने योग्य बनाया, सोते हुए लोगों को जागृत किया और पूरे भारत में भेदज्ञान का ढंका बजाया हैं। गुरूदेवश्री ने स्वयं तो अमृतरस पिया और हमसब को भी पिलाया। धन्यघडी! धन्यकाल! जो ऐसे महापुरूष का समागम मिला। पूज्य गुरूदेवश्री का हम पर अनन्त–अनन्त उपकार है।

अहो! उपकार जिनवर नो, कुन्दनो ध्वनि दिव्य नो।
जिन–कुन्द ध्वनि आप्या, ते गुरुवर कहान नो।।

मनन जैन एवं दीप शाह
कक्षा 10